Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 12, Issue 01, January-June, 2024
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2024

हिन्दी साहित्य व संगीत का अन्तर्सबंध: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

DR. SHYAM SUNDER SHARMA
HOD, Department of Music, St. Wilfreds P.G. College, Jaipur, Rajasthan

सार: *संगीत-वाग्गेयकारों को अपनी सृजनशीलता व रचनाधर्मिता के आधार छन्द, अलंकार, रस, भाषा-सौष्ठव सहित अन्य समस्त तत्व साहित्य से ही प्राप्त हुए हैं, जिससे कि वे अपनी संगीत-सर्जना में आत्मा रूपी स्वर, लय, ताल, राग इत्यादि सांगीतिक अलंकरणों को इन साहित्यिक अलंकरणों से सुसज्जित कर संगीत-रचनाओं को संगीत-साहित्य के सुमेल से सम्पूर्ण सौन्दर्य-सौष्ठव साथ प्रस्तुत करने में सक्षम हो सके है। संगीत व साहित्य के परस्पर अन्तर-सुमेल से संगीत-साहित्य की सम्पूर्ण भाव-प्रवणता के साथ अभिव्यक्ति व प्रस्तुति संगीत व हिन्दी साहित्य की अन्तर्सबंद्धता को प्रमाणिक रूप से सिद्ध करती है।*

कुंजी शब्द: *हिन्दी साहित्य, संगीत, वाग्गेयकार।*

भूमिका

भारतीय ललित कलाओं में संगीत व साहित्य कला की प्राचीन व समृद्ध परम्परा रही है। संगीत-कला का प्रादुर्भाव सृष्टि के प्रारंभ से ही अपनी धार्मिक एवं आध्यात्मिक प्रकृति के साथ ब्रह्मा से माना गया है जिसे शिव, सरस्वती, नारद, गान्धर्व-किन्नर एवं वर्तमान परिदृश्य में लौकिक संगीत के विभिन्न स्वरूपों यथा- शास्त्रीय, उपशास्त्रीय, सुगम व लोक हमारे समक्ष है। भारतीय संगीत को नाद्-ब्रह्म कहा गया है जिसका विस्तार से विवेचन सामवेद में किया गया है। हिन्दी साहित्य कला का प्रादुर्भाव प्राकृत की अन्तिम अपभ्रंश-अवस्था से ही माना गया है। इस सन्दर्भ में सुप्रसिद्ध भाषा वैज्ञानिक डॉ. हरदेव बाहरी ने कहा है कि ''हिन्दी साहित्य का इतिहास वस्तुतः वैदिक काल से प्रारंभ होता है।" तत्कालीन समय में अपभ्रंश के अलग-अलग रूप प्रचलन में थे इनमें सातवीं-आठवीं शताब्दी से पद्य रचना प्रारंभ हो गई थी। हिन्दी साहित्य उत्तरोत्तर क्रमशः विकास के विभिन्न सोपानों से होता हुआ वर्तमान में अपने समृद्ध स्वरूप में हमारे समक्ष है।

भारतीय कला जगत् के विविध कला-स्वरूपों में संगीत व साहित्य कला स्वतन्त्र रूप से समृद्ध व उन्नत कलाएं हैं जो भारतीय कला जगत् ही नहीं वरन् सम्पूर्ण विश्व के कला पटल पर अपने सम्पूर्ण सौष्ठव के साथ सुशोभित है। किसी भी कलासृजन की सम्पूर्ण अभिव्यक्ति व सौन्दर्यबोध के लिए कलाकार की सृजनधर्मिता में कलाओं का परस्पर समन्वय, अवदान महत्वपूर्ण होता है साथ ही यह कलाओं की परस्पर निर्भरता एवं इनके अन्तर्सम्बन्ध को उजागर करता है। कलाओं की परस्पर निर्भरता व अन्तर्सबंध को संगीत व साहित्य कला के परिप्रेक्ष्य में देखें तो इन दोनों कला-प्रकारों का अन्तर्सबंध व्यापक व प्रमाणिक रूप से उजागर होता है। संगीत व साहित्य के विकास के प्रारंभ में वैदिक काल में वैदिक साहित्य, ऋचाएं मंत्र अपने पद्यात्मक व गद्यात्मक स्वरूप में गेय होती थी। इनका यज्ञ इत्यादि कर्मों में गायन किया जाता था। वैदिक काल में गान-क्रिया को को साम-गायन कहा जाता था।

वैदिक काल के पश्चात भारतीय संगीत में संगीत की मुख्यतः दो धाराएं प्रचलन में आयी भक्ति संगीत व दरबारी संगीत। संगीत के विविध स्वरूपों शास्त्रीय संगीत, उपशास्त्रीय संगीत, सुगम संगीत व लोक संगीत में विविध-रचनाओं का सृजन हुआ। संगीत में गायन विधा के प्रकारों यथा ध्रुवपद-धमार, ख्याल, भजन, गीत, गज़ल इत्यादि रचना-प्रकारों का सृजन हुआ। वैदिक संगीत के रचना-काल के पश्चात संगीत की ध्रुवपद-धमार, ख्याल इत्यादि रचनाओं में संस्कृतनिष्ठ भाषा के साथ-साथ बृज, अवधि एवं हिन्दी भाषा का मुख्यतः प्रयोग हुआ है। संगीत-रचनाओं में भाषा साहित्य के प्रयोग को दृष्टिगत करें तो संगीत की प्राचीन व सामवेदीय गायकी ध्रुवपद की रचनाओं का साहित्य देवी-देवताओं की स्तुतियाँ, राधाकृष्ण के चरित्र व लीलाओं का वर्णन एवं प्रकृति चित्रण दृष्टिगत होता है साथ ही इन रचनाओं में भाषागत दृष्टि से देखें तो हिन्दी भाषा का प्रयोग संगीत-वाग्गेयकारों द्वारा संगीत के सिद्धान्तों की जानकारी को रचना-साहित्य में समाहित करते हुए किया गया है। ऐसी ही एक रचना का सृजन वाग्गेयकार संगीतमार्तण्ड पं. ओमकार नाथ ठाकुर 'प्रणव-रंग ने किया। इस ध्रुवपद-रचना का साहित्य इस प्रकार है- "स्थाई - चारों बानी के ब्यौहार सुन लीजे। गुनिजन तब पावे में विधा को सार।। अन्तरा-प्रथम बानी गौबरहार, दूजी कहत खंडार। तीजी डागुर गावत, और भनत नौहार।।' इसी प्रकार एक अन्य ध्रुवपद-रचना वाग्गेयकारा प्रो. डॉ. मधु भट्ट तैलंग ने सृजित की है जिसका रचना-साहित्य इस प्रकार है- स्थाई - नाद भेद अपार गुनिजन, कबहूँ ना पायो पार। गाय गाय थके सब, रच-पच हार डार।। अन्तरा - इडा पिंगला सुषुम्ना नाडी, कमल दल ते होय सृष्टि। सुरन शुद्ध कोमल तीवर, मंद्र मध्य झंकृत तार।।

संचारी-स्वस्थान चार आलाप विस्तार श्रुति मूर्च्छना लय प्रस्तार। गमक कण मींड शब्दाकार याहि कीजै राग ब्यौहार।। आभोग-ध्रुवपद है ओमकार साधत गुनी बार बार। गुरून कीजे सबन पार, गान (नाद) महिमा अपरम्पार।" इसी प्रकार धमार-गायन की रचनाओं में भी हिन्दी साहित्य का प्रयोग किया गया, इसका रचना-साहित्य इस प्रकार है - स्थाई - एरी सखी अपने पिया संग, अबके फागुन में खेलोंगी होरी। अन्तरा - अबीर गुलाल अतर अगरजा, सुगन्ध लिए भर भर झोरी।।" इसी प्रकार ख्याल, गीत, गज़ल भजन इत्यादि गायन-प्रकारों में भी हिन्दी साहित्य व भाषा का प्रचुरता से प्रयोग किया गया।

मध्यकाल में मुगलों के भारत-आगमन से भारतीय संस्कृति पर अतिक्रमण व संक्रमण से सुरक्षित एवं संरक्षित रखने के उद्देश्य से अष्ठछाप के कवियों कुम्भनदास, सूरदास, परमानंददास, कृष्णदास, गोविन्ददास, नंददास, छीतस्वामी व चतुर्भुजदास ने कृष्ण भक्ति की कालजयी रचनाओं का सृजन किया जिन्हें समय-समय पर भारतीय संगीत के वाग्गेयकारों ने विभिन्न रागों में संगीतबद्ध कर संगीत-साहित्य-जगत में नवीन आयाम स्थापित किए। संगीत मार्तण्ड पं. ओम्कार नाथ ठाकुर ने सूरदास के पद ''री मैया मोरी मैं नही माखन खायो" को संगीतबद्ध कर जिस भाव-प्रवणता से प्रस्तुत किया वो आज भी संगीत जगत् में भावपूर्ण गायन का आदर्श मानक है। भक्त, शिरोमणि तुलसीदास की कालजयी रचना - " ठुमक चलत रामचन्द्र बाजत पैजनियाँ" को अनेक नामचीन संगीतकारों ने अपनी-अपनी सृजनशीलता व रचनाधर्मिता के अनुसार संगीतबद्ध कर प्रस्तुत किया। इसी प्रकार कृष्ण भक्ति के पर्याय रसखान सहित नानक रैदास व निर्गुण भक्ति के सिरमौर कबीर के पदों 'चदरिया झीनी रे झीनी" इत्यादि पदों को संगीतकारों ने इस साहित्य व भाव के अनुकूल रागों में रागबद्ध कर इन भक्त कवियों व इनके पदों को संगीत-साहित्य जगत में अमरता प्रदान की साथ ही संगीत व हिन्दी साहित्य के अतरंग अन्तर्सबंधों को भी प्रमाणिक रूप से उजागर किया है।

तत्कालीन बदलते समसामयिक परिवेश में संगीत-रचनाओं यथा ध्रुवपद, धमार, ख़्याल इत्यादि के साहित्य में भी परिवर्तन हुआ। इन रचनाओं में अध्यात्मिकता के स्थान पर सामाजिक, आर्थिक व राजनैतिक परिवर्तनों का प्रभाव दृष्टिगत होता है। संगीत-रचनाओं के साहित्य में वाग्गेयकारों द्वारा तत्कालीन नवाबों व बादशाह की प्रशंसा का उल्लेख मिलता है। इस समय के ख्यातनाम संगीतज्ञ बैजू बावरा ने राजा मानसिंह तोमर की पत्नी मृगनयनी के नाम से गुर्जरी तोडी व मंगल गुर्जरी राग बनाए। इस समय में संगीत-रचनाओं में प्रकृति चित्रण से सम्बन्धित साहित्य भी मिलता है। ऐसी ही एक रचना राग भूपाली में ध्रुवपद-रचना है जिसका साहित्य इस प्रकार है - स्थाई - तू ही सूर्य तू ही चन्द्र, तू ही पवन तू ही अगन। तू ही आप तू आकाश, तू ही घरनी यजमान।। अन्तरा - भव रूद्र उग्र सर्व, पशुपति सम समान। ईशान भीम सकल, तेरे ही अष्टनाम।।" वाग्गेयकार पं. लक्ष्मण भट्ट तैलंग ने राग नट भैरव के द्रुत ख्याल के रचना-साहित्य में भक्त शिरोमणि मीरा के पद को रचा - स्थाई - माई मोरे नैना बसे रघुवीर, कर शर चाप कुसुम सर लोचन, ठाडे भये रणवीर।। अन्तरा - ललित लवंग तब नागर लीला, जब देखो तब धीर।। मीरां कहे प्रभु गिरधर नागर, कंचन बरसत नीर।।

प्रमुख अन्य भक्त कवियों तुलसीदास, सूरदास, रसखान, नानक, कबीर, रैदास, मलूकदास इत्यादि की पद-रचनाओं के साहित्य को भी विभिन्न गायन-प्रकारों के रचना-साहित्य में मुख्य रूप से शामिल किया गया जो कि भारतीय संगीत को हिन्दी साहित्य की आधारभूत मौलिक देन है। भारतीय संगीत में संगीत-रचनाओं में साहित्यिक-नवाचार के दिग्दर्शन भी होते हैं। जन-जन में प्रिय कबीर, नानक व रैदास के पदों को नवीन कलेवर में शास्त्रीयता के पुट के साथ शास्त्रीय गायन-प्रकारों में सृजित कर प्रस्तुत किया है। एक ऐसी ही नानक की पद-रचना, राग-मांड, ताल-गजझंपा में ध्रुवपद-रचना सृजित कर प्रस्तुत की गई। जिसका साहित्य इस प्रकार है- स्थायी - साधो मन का मान त्यागो। काम क्रोध संगत दुर्जन की ताते अहनिस भागो। अन्तरा - सुख दुखः दोनों सम करि जानो, और मान अपमाना।। संचारी - हर्ष शोक ते रहे अतीता, तिन जग तत्व पिछाना। स्तुति निंदा दोऊ त्यागे, खोजे पद निर्वाणा।। आभोग - जन नानक ये खेल कठिन है, कोऊ गुरू-मुख जाना।। कलाओं का सृजन व रचना-धर्मिता एवं कलाकार की सृजनात्मकता समसामयिक परिदृश्य से सदैव ही प्रभावित होती रही है ऐसी ही कुछ संगीत-रचनाओं का साहित्य इस प्रकार है - राग देस ध्रुवपद-रचना, ताल-सूल ताल, "स्थायी - हिन्दू मुसलमान, सब हैं भाई भाई, मन्दिर मस्ज़िद की तो क्यूं है लड़ाई।। अन्तरा - सुर में मिलता राम और रहीम, सप्त सुरों से ये सृष्टि बनाई।" महाराष्ट्र में भूकम्प की प्राकृतिक आपदा आने पर कलाकार की संवेदनशीलता इनकी संगीत रचनाओं के साहित्य-सृजन में इस प्रकार समक्ष हुआ - राग हेमन्त, ताल-

सूलताल, ''स्थायी - संवेदना हमारी, सकल महाराष्ट्र को, भूकम्प पीड़ित जन समुदाय को।। अन्तरा - करें शंभू वन्दना, दूर करो संताप, फिर न करो ताण्डव, वर दो प्रकृति को।।"

तत्कालीन परिस्थितियों से प्रभावित इन रचनाओं का सृजन कला व वाग्गेयकार की संवेदनशीलता व प्रासंगिकता को प्रमाणिक रूप से सिद्ध कर उजागर करता है। इसी प्रकार बेटी बचाओ के अभियान पर भी वाग्गेयकारा प्रो. डॉ. मधु भट्ट तैलंग ने साहित्य व संगीत-रचना की सर्जना कर ध्रुवपद-रचना प्रस्तुत की है। इस रचना का साहित्य इस प्रकार है- राग - अहीर भैरव, ताल - तीव्रा, रचना-साहित्य - ''स्थाई - हम कन्या है हमें गर्व है, हम धन्या है हमें गर्व है। अन्तरा - हम बेटी पत्नी, बहिने हैं, माँ के तन के गहने है। हम दुर्गा रूपी लक्ष्मीबाई, पन्नाधाय, देवकी माई।।" भारत के प्रधानमंत्री आदरणीय नरेन्द्र मोदी के स्वच्छता-अभियान के आह्वान पर भी सृजनात्मक नवाचार के अन्तर्गत साहित्य व संगीत-रचना का नव स्वनिर्मित राग चारूधरा व अद्धा चौताल में सृजन कर वाग्गेयकारा विदूषी प्रो. डॉ. मधु भट्ट तैलंग ने प्रस्तुत किया जिसकी शब्द-रचना है- ''स्थाई - हम मन और तन को स्वच्छ करें और सब मिल के देश को स्वच्छ करें। प्रभु ध्यान धरें, प्रभु गान करें, गुरु मात-पिता का सम्मान करें। ध्यान धरे, सम्मान करे।। हम मन और तन को स्वच्छ करें।

संगीत व साहित्य के प्रयोगात्मक नवाचार के अन्तर्गत समान स्वर-शब्द रचनाओं का सृजन भी किया गया। इन रचनाओं का साहित्य इस प्रकार दृष्टिगत होता है - ''स्थाई - परम गुरू ध्यान धरो। ज्ञान मान सगरो। पार धार मन रो।। अन्तरा - ज्ञान परम ध्यान परम्। गुरू मान परम धरम। गुरू ज्ञान दे सगरो।।" आधुनिक हिन्दी साहित्य में सर्वश्री राष्ट्रीय कवि मैथलीशरण गुप्त, जयशंकर प्रसाद, माखन लाल चतुर्वेदी, दिनकर, सुभद्रा कुमारी चौहान व महादेवी वर्मा, डॉ. राही मासूम राजा, सुमित्रा नंदन पंत, हरिवंश राय बच्चन व कुमार विश्वास सहित अधुना कवियों द्वारा सृजित कविताओं व साहित्य को भी संगीत के विभिन्न गायन-प्रकारों यथा-ध्रुवपद, ख़्याल, गीत, गज़ल इत्यादि में संगीतबद्ध कर नवीन कलेवर में प्रस्तुत किया जो साहित्य व संगीत प्रेमियों में खासी प्रचलित, लोकप्रिय एवं प्रसिद्ध है।

निष्कर्ष

संगीत-वाग्गेयकारों को अपनी सृजनशीलता व रचनाधर्मिता के आधार छन्द, अलंकार, रस, भाषा-सौष्ठव सहित अन्य समस्त तत्व साहित्य से ही प्राप्त हुए हैं, जिससे कि वे अपनी संगीत-सर्जना में आत्मा रूपी स्वर, लय, ताल, राग इत्यादि सांगीतिक अलंकरणों को इन साहित्यिक अलंकरणों से सुसज्जित कर संगीत-रचनाओं को संगीत-साहित्य के सुमेल से सम्पूर्ण सौन्दर्य-सौष्ठव साथ प्रस्तुत करने में सक्षम हो सके है। संगीत व साहित्य के परस्पर अन्तर-सुमेल से संगीत-साहित्य की सम्पूर्ण भाव-प्रवणता के साथ अभिव्यक्ति व प्रस्तुति संगीत व हिन्दी साहित्य की अन्तर्सबंद्धता को प्रमाणिक रूप से सिद्ध करती है।

संदर्भ

1. द्विवेदी, हजारी प्रसाद, ग्रन्थ - हिन्दी - उद्भव विकास और स्वरूप, 1984, पृष्ठ 15
2. शर्मा, डॉ. श्याम सुन्दर, ग्रंथ - प्रणव रंग और ध्रुवपद-धमार, प्रथम संस्करण, 2012, पृ.सं. 11
3. साक्षात्कार - वाग्गेयकारा तैलंग, प्रो. डॉ. मधु भट्ट
4. तैलंग, वाग्गेयकार पं. लक्ष्मण भट्ट, ग्रंथ - संगीत रसमंजरी, पृ.सं. 128
5. गर्ग, डॉ. लक्ष्मी नारायण, ग्रंथ - राग विशारद, पृ.सं. 411
6. तैलंग, पं. लक्ष्मण भट्ट, ग्रंथ-संगीत रसमंजरी, पृ.सं. 167
7. साक्षात्कार - तैलंग वाग्गेयकार पं. लक्ष्मण भट्ट।
8. तैलंग, मधु भट्ट, ग्रंथ - ध्रुपद गायन परम्परा, पृ.सं. 162
9. तैलंग, मधु भट्ट, ग्रंथ - ध्रुपद गायन परम्परा, पृ.सं. 162
10. पत्रिका - ध्रुवावाणी, प्रकाशक - इण्टरनेशनल ध्रुवपद धाम ट्रस्ट
11. पत्रिका - ध्रुवावाणी, प्रकाशक - इण्टरनेशनल ध्रुवपद धाम ट्रस्ट
12. साक्षात्कार - शर्मा, डॉ. श्याम सुन्दर